International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 04, April 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

क्षमा शर्मा के रचनाओं में नारी विमर्श

डॉ, ललिता बी.एन.
प्रेसिडेंसी कॉलेज, केंपापुरा, हेब्बाल

सृष्टि के प्रारम्भ में नर और नारी समानाधिकारी थे। नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं परंतु इस पुरूष प्रधान संस्कृति में पुरूष ने हमेशा ही स्त्री को दासी समझा है। स्त्री की सामाजिक स्थिति की तुलना में निम्न स्तर की हो गयी है। नारी ने नारी की मनःस्थिति को जिस विशिष्टता से पहचाना है और जिस निपुणता से वह साहित्य में अभिव्यक्ति दे रही है, वह सचमुच ही प्रशंसनीय है। साहित्य की मुख्य धारा ने स्त्री की अस्मिता, आकांक्षाओं, इच्छाओं, जरूरतों, अनुभवों एवं मनःस्थिति की कुल मिलाकर उपेक्षा ही की है। कितनी ही लेखिकाओं ने उच्च कोटि का साहित्य रचा है और अपना एक वजूद बनाया है।

मनुस्मृति में लिखा है–"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवतः."1 अर्थात् जहाँ स्त्री की पूजा की जाती है, वहाँ देवता वास करते हैं। नारी साहित्य स्त्री की अस्मिता एवं अनुभवों को सर्वाधिक महत्व देता है। अन्य साहित्य की भाँति स्त्री साहित्य का आरंभ कविता से हुआ। किन्तु आधुनिक काल में गद्य का अविर्भाव और अभिव्यक्ति के लिए एक और माध्यम उपलब्ध हुआ। कविता की धारा अपनी दिशा में बहती रही किन्तु गद्य के माध्यम से स्त्रियों ने अपना संघर्ष जारी रखा। हिन्दी उपन्यास और कहानी दोनों ही विधाओं में लेखिकाओं की बराबर की साझेदारी है। इन लेखिकाओं ने प्राचीन मर्यादाओं और रिवाजों को बरकार रखकर स्त्री की अस्मिता को उभारने का प्रयास किया है।

क्षमा जी की रचनाओं में शोषित, पीडित नारी घर और परिवर से पलायन की कल्पना अवश्य करती है परंतु वास्तविक रूप में उसे क्रिया में नहीं उतार पाती। उनकी नारियाँ जिम्मेदारियों के प्रति सजग दिखाई देती हैं। जीवन से निराश और हताश होकर भी परिस्थितियों से समझौता कर लेती है।महात्मा गाँधी ने भी नारी के आदर्श के विषय में कहा है कि "नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज शुद्ध और सही भावना से करती है, तब पहाडों को भी हिला देती है।" वे स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मान कर उसकी पूजा करते है।

क्षमा जी की नारी चेतना, व्यक्ति स्वातंत्रय का सम्मान करती है, किन्तु साथ ही वे इस बात का भी आग्रह करती हैं कि हमारा व्यक्ति–स्वातंत्रय सामाकजक हित में बाधा न बने। समाज व्यक्ति के लिए व्यापक सुरक्षा कवच है। उसके अपने कुछ नियम हैं। व्यक्ति समाज का अनिवार्य अंग है। अतः व्यक्ति का व्यवहार समाज के नियमों के अनुकूल होना चाहिए। स्त्री–पुरूषों के सन्दर्भ में यदि यह नियम थोडे–बहुत अलग हैं तो इनके पीछे की भूमिका अवश्य सकारात्मक होगी। विवाह–संस्था या परिवार समाज को सुचारू ढंग से नियमित करने वाली संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं से समाज के व्यापक हित की रक्षा होती है। इन संस्थाओं के प्रति उत्पन्न होने वाला अविश्वास समाज में अव्यवस्था पैदा कर सकता है।

क्षमा जी ने अपने कथा–साहित्य में दाम्पत्य सम्बन्धों की अपूर्णता, रिक्तता बोध और एकाकीपन के दंश से अनेक वैवाहिक संबंधों को असफल सिद्ध किया है। लेकिन इस विष को पीकर जीवन व्यतित करने की नारी की विवशता को खंडित कर एक जीवन को नवीन

आयाम दिया है। आधुनिक नारी अपनी सामाजिक पहचान प्राप्त करने के लिए लगातार इस पुरूष प्रधान समाज से टक्करें ले रही है लेकिन फिर भी वह हिम्मत नहीं हारती। परिस्थितियों की प्रेरणा और सहयोग से नारी का स्वाभिमान एक नई दिशा की ओर करवट बदल रहा है। परतंत्रता की बेडियों को तोडकर आत्मनिर्भर बनने की आकांक्षा उसके जागृत मन में उठने लगी है। आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षा में अग्रसर होकर वह समाज में अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करना चाहती है।

भारतीय समाज में साठ के दशक से नारी मुक्ति की चेतना उत्तरोत्तर विकास की दिशा में अग्रसर हुई। स्वाधिनता प्राप्ति से वह अपने ढंग से अपना जीवन व्यतीत करने पर बल दे रही है। शिक्षा प्राप्त कर वह अपने स्वाधीन व्यक्तित्व के विकास पर बल दे रही है और स्व अस्तित्व के बल पर उभरती प्रवृत्तियों को व्यक्त कर रही है।शिक्षा के आधारपर प्राप्त नौकरियों ने आज की नारी को आत्मविश्वास, आर्थिक सुरक्षा तथा आत्मसजगता प्रदान की है। इस आत्मसजगता के कारण उसका संघर्षशील रूप आज प्रखर होता जा रहा है। किसी भी रूप में अपने आप को पुरूष से हीन मानने को वह तैयार नहीं है। यह नारी शिक्षित–दीक्षित होकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरूषों के समान अधिकारों और पदों को प्राप्त कर रहीं है।

क्षमा जी अपने कथा–साहित्य के माध्यम से स्त्री स्वतंत्रता को वास्तविक तथा तर्कशुद्ध रूप में प्रस्तुत करती है।आज के परिवेश में पति और पत्नी दोनों ही अपने अपने व्यक्तित्व को स्वतन्त्र रखना चाहते हैं। अब नारी अपने स्वत्व के लिए समाज में आमूल परिवर्तन की कामना करती है। आर्थिक आत्म–निर्भरता और मानसिक स्वतन्त्रता से वह अपने जीवन की गुत्थियों को स्वयम् सुलझाने में समर्थ है। भारतीय समाज में साठ के दशक से नारी मुक्ति की चेतना उत्तरोत्तर विकास की दिशा में अग्रसर हुई। स्वाधिनता प्राप्ति से वह अपने ढंग से अपना जीवन व्यतीत करने पर बल दे रही है। शिक्षा प्राप्त कर वह अपने स्वाधीन व्यक्तित्व के विकास पर बल दे रही है और स्व अस्तित्व के बल पर उभरती प्रवृत्तियाँ को व्यक्त कर रही है। आज के परिवेश में पति और पत्नी दोनों ही अपने अपने व्यक्तित्व को स्वतन्त्र रखना चाहते हैं। पुरूष की भाँति स्त्री भी समाज में अपनी स्वायत्तता स्थापित करना चाहती है। रूढिवादी सामाजिक संस्कारों के प्रति अब नारी जागृत हो रही है। वह अपने स्वत्व के स्थापना का पूर्ण प्रयास कर ही है।

सीमोन द बोउवार लिखती है–"पुरूष जान–बूझकर स्त्री को बौना रखता है। स्त्री न देवी है, न राक्षसी, वह मानवी है जिसे समाज की फूहड प्रथाओं ने दासता में जकडकर रख दिया है।"2

क्षमा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री–जीवन से संबंधित समस्याओं तथा त्रासदियों का चित्रण विशेष रूप से मिलता है।

महिला रचनाकारों के संबंध में ममता कालिया जी का कथन है, –"जाहिर है, महिला लेखन में विलक्षण पठनीयता, विश्वसनीयता, जिजीविषा और मार्मिकता के कारण ही इसे विशाल पाठकवर्ग मिला है। आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा के साथ–साथ आत्मसजगता और परिवेश चेतना महिला कहानीकार के रचनात्मक सरोवर का केंद्रिय बिन्दु रहा है।"3

क्षमा शर्मा जी ने अपने उपन्यास और कहानी साहित्य में परिवारगत संदर्भों में स्त्री–पुरूष के बदलते संबंधों को चित्रित एवं विश्लेषित किया है। उनकी रचनाओं में नारी इतनी स्वतंत्र है कि विवाहित होते हुए भी पर–पुरूष के साथ संबंध प्रस्थापित करने में कोई

हिचक नहीं दिखाती। जबकि अधिकांश रचनाओं में उसे अपनी भावनाओं और इच्छाओं को प्रकट करने की भी स्वतंत्रता नहीं है। नारी स्वतंत्रता के विषय में क्षमा जी का कहना है, नवीन उपलब्ध स्वातंत्रय भावना ने नारी को भी अपनी अस्मिता को पहचानने की शक्ति दी है। फलस्वरूप नारीयों में अपने स्व के प्रति गहरी आस्था जन्म लेने लगी है। इसी आशय में कमलेश्वर की निम्नलिखित पंक्तियाँ विचारणीय हैं, "आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा, देह सम्पदा और वास्तविक सम्मान के साथ आयी है।" 4

क्षमा जी के साहित्य में वह प्रश्न उठता हैं कि, "लोकलाज का बंधन सिर्फ महिलाओं के लिए ही क्यों ? क्या पुरूषों का दायित्व नहीं बनता कि वे महिलाओं को मर्यादित और उनके मन की जिंदगी जीने दें। क्षमा जी पूछती है कि जब इक्कीसवीं सदी का लडका अपने मानमाफिक स्वच्छंद जीवन जी सकता है तो इक्कीसवीं सदी की लडकी क्यों नहीं ?" 5 क्षमा जी के कथा–साहित्य में स्त्री–चेतना, स्त्री जीवन की व्यथा के रूप में चित्रित हुआ है। इस चित्रण में स्त्री जीवन से जुडी समस्याएँ, संघर्ष, स्वतंत्रता, अधिकार, चेतना, स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता, अस्मिता आदि स्त्री चेतना के कई तथ्य सामने आते हैं। लेखिका का कथा–साहित्य यह प्रमाणित करता है कि भारतीय स्त्री–पुरूष के लगभग सभी संभावित पहलुओं को उन्होंने बडी बेबाकी के साथ व्यक्त किया है। उन्होंने अपने साहसपूर्ण मौलिक दृष्टि के साथ जीवन की विषमताओं को अपनी कृतियों में विश्लेषित किया है।

सृष्टि के मूल में स्त्री और पुरूष दो ऐसे तैव है जिनके बापसी सहयोग से ही सृष्टि विकास होता है। "नारी और पुरूष जीवन की ऐसी दो रेखाएँ हैं जो यदि मिल जाती हैं तो कोण, त्रिकोण या चतुर्भुज, बहुभुज बना देती है और यदि न मिल सकी तो सामनान्तर रेखाएँ बनकर अनंत काल तक विलगाव की स्थिति पैदा कर सकती है।" 6

एक उर्दू शायर ने लिखा है–"दर्द का हद से गुजर जाना ही दवा हो जाना है।" अमित कुमार जी के अनुसार, हम क्षमा जी की आँखों से स्त्री जीवन के ऐसे ही वैविध्यपूर्ण संसार से परिचित होते हैं। यह परिचय न सिर्फ स्त्री जीवन को देखने के पुरूषवादी मानसिकता वाले रूझानों को तोडती हैं, बल्कि पारंपरिक स्त्रियों से परे बूढी, जवान और बच्ची सभी समूहों की गाथा को अपने में समेटती हैं।

सीमोन द बोउवार लिखती है–"पुरूष जान–बूझकर स्त्री को बौना रखता है। स्त्री न देवी है, न राक्षसी, वह मानवी है जिसे समाज की फूहड प्रथाओं ने दासता में जकडकर रख दिया है।" 7

मोबाइल उपन्यास में नायिका की माँ नारी जागरण से प्रभावित घर गृहस्थी में रमी हुई है जो अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करनेवाली आत्मसजग नारी है। वह कभी नहीं चाहती कि उनकी वजह से किसी का समय बर्बाद हो।

इसके बाद कहानी में नायिका अपने पति के एकाधिकार से त्रस्त है। उसकी स्थिति परिवार में एक नौकरानी की तरह है, जिसे मानो दो समय के खाने–कपडे की शर्त पर अपने कर्तव्य को निभाना है। इस कहानी की नायिका अनेक स्त्रियों की व्यथा–कथा हमें हमारे आस–पास दिखाई देती है जो पहले अबला थी, अबवह अकेली होने के साथ असहाय भी है, जो हमें मैथिलीशरण गुप्त की इन दो पंक्तियों की याद दिलाती है:–

अबला जीवन! ळाय तुम्हारी यहीं कहानी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 04, April 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आंचल में है दूध और आँख में पानी।

रसोईघर कहानी में नायिका सूबे की पहली कलेक्टर बनी है। साथ ही उसने वहाँ की लडकियों को पढाने में मदद की है। लेकिन अब यह पढी–लिखी लडकियाँ अनपढ लडकियों को अपने से कम मानने लगी है।

बया कहानी में सुशिक्षित रिपु शहर में अपनी घर–गृहस्थी सँभाले हुए हैं। लेकिन गाँव के जमीन–जायदाद पर भाभी उसका हक गबारा नहीं समझती। मीठे–मीठे शब्दों से उसको घायल कर देती है। नायिका अपना हिस्सा माँगना चाहती है, लेकिन हताश होकर भविष्य का विचार कर भाभी द्वारा प्रस्तावित विकल्प स्वीकार कर लेती है।

क्षमा जी की रचनाओं में घरेलू नारी के अतिरिक्त कामकाजी नारी भी बंधनों से मुक्त नहीं है। आतमनिर्भर और पराधीन नारी निराश व चिंतीत होकर जिन्दगी से मुक्ति की कामना करती है। मोबाइल उपन्यास में नारी की कुंठा को व्यक्त किया है। वह पति पर पूर्णरूप से आश्रित पत्नी है, जो निरंतर पति के सामने दबी हुई दिखाई देती है। पति द्वारा उपेक्षित होकर भी उसकी हर आज्ञा का पालन करती है। अपनी नापसंद बातों का विरोध करना तो चाहती है, लेकिन डर और आशंका से कर नहीं पाती। पति के एकाधिकार की भावना से आहत तथा रोजमर्रा के जीवन से त्रस्त पत्नी की चिंताएँ निरंतर बढती ही रहती है। चिंतित पत्नी इस दुनिया से पलायन तो करना चाहती है लेकिन गृहस्थी की बेडियाँ उसके पैरों से छूट नहीं पाती।

चार अक्षर कहानी में सरोज को विवाह के ठीक पंद्रह दिन बाद डिप्रेशन का गहरा झटका लगा था। कुछ सालों बाद उसकी मौत हो गई। आखिर तक पता नहीं चला कि क्या बात थी ? इतनी खुशहाल लडकी की जिन्दगी इतनी घुटन भरी क्यों हो गयी ? काश उसे अपने पति से आत्मीयता प्राप्त होती तो वह सदा निराश और चिंतित ना रहती असामंजस्य के कारण एक जिन्दगी यू बर्बाद न होती।

अमित कुमार जी के अनुसार "हम क्षमा जी की आँखों से स्त्री जीवन के ऐसे ही वैविध्यपूर्ण संसार से परिचित होत हैं। यह परिचय न सिर्फ स्त्री जीवन को देखने के पुरूषवादी मानसिकता वाले रूझानों को तोडती है, बल्कि पारंपारिक स्त्रियों से परे बूढी, जवान और बच्ची सभी समूहों की गाथा को अपने में समेटती है।"8

क्षमा जी विवाह पद्धति एवं परिवार संस्था का समर्थन करती हैं। उनकी दृष्टि में स्त्री और पुरूष मिलकर ही परिवार बनता है। विवाह संस्था के कारण ही पति–पत्नी में उत्तरदायित्व बढता है। विवाह व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की दृष्टि से महत्व रखता है। लेखिका ने अपनी कुछ कहानियों में विवाह संस्था का समर्थन किया है। उन्होंने अपने इन विचारों की प्रस्तुति पात्रों के माध्यम से की है।जीवन विषमतामय है इस तथ्य को झेलते हुए आज के पति–पत्नी जहाँ फूलभरी राह में चलते हैं वहीं काँटों की चुभन भी महसूस करते हैं। क्षमा जी विवाह–पद्धति तथा परिवार संस्था की कट्टर समर्थक है। उनके विचारनुसार सारे विश्व का ढाँचा विवाह–संस्था के कारण ही टिका हुआ है। विवाह संस्था न होती तो सभ्यता, संस्कृति का कोई अर्थ नहीं होता। विवाह–संस्था के कारण मनुष्य विभिन्न भूमिकाओं में व्यस्त रहता है। विभिन्न उत्तरदायित्वों को वहन करता है। विवाह–संस्था के कारण ही पीढियाँ विकसित होती रहती है, मानवता का विकास होता है। अतः विवाह का क्षमा जी जोरदार समर्थन करती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 04, April 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विवाह के संदर्भो में अनके परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं। जीवन में यांत्रिक व्यवस्था एवं भावशून्यता तथा मूल्य विहीनता के विकसित होने के परिणाम स्वरूप समाज में जीवन अत्यन्त जटिल हो गया है। विवाह जो सात जन्मों का साथ माना जाता था, आज समझौता मात्र माना जाने लगा है। अब स्त्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का प्रयास कर रही है। आज की नारी अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना चाहती है। वह रूढिवादिता को नहीं स्वीकार करती। स्त्री की आत्मनिर्भरता ने पुरूष के साथ उसके सम्बन्धों को बदला है। इस परिवर्तित स्थिति में एक ओर दुविधाओं का सिलसिला अपनी जगह विद्यमान है तो दूसरी ओर इन सम्बन्धों में रिक्तता, विसंगति, शून्यता आदि भाव गहरे होते जा रहे हैं। आज विधवा विवाह, प्रेम, अर्न्तजातीय विवाह को मान्यता मिलने लगी है। वर्तमान में बदलती परिस्थितियों ने विवाह के उम्र में मानों स्वयं ही वृद्धि कर ली है। आज के युग में युवक व युवतियाँ देर से विवाह करना उपयुक्त समझतें हैं।

बाबा तुलसी ने मानस में लिखा है–"जाकी रही भावना जैसीं प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"9 आज की नारी शिक्षित होने के कारण अपने व्यक्तित्व को जानने लगी है। अपने अधिकारों के प्रति वह सचेत हो चुकी है। महादेवी वर्मा के अनुसार "नारी अपने अधिकारों की इच्छा न करे, अधिकारी भी बने, अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए।"9

मन की कोमल मनोभावना है प्रेम। विभिन्न व्यक्ति इसका विभिन्न रूपेण अनुभव करते हैं, विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं एवं विभिन्न अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। कुछ प्यार को उदार बनाने वाला मानते हैं तो कुछ स्वार्थी बनाने वाला। यथार्थ में प्यार पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखता है।

भारतीय नारी की छवि है कि लज्जा व उचित संस्कारों से युक्त हो, व्यर्थ का अहंकार तो आने ही नहीं देना चाहिए। विधाता ने नारी को सौन्दर्य प्रदान किया। वह तन–मन दोनों से सुन्दर है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह अपनी सुन्दरता को गलत अर्थों में प्रयोग करे। नारी सृष्टि की सुन्दर कृति है। हमारे साहित्यिकों ने नारी का आसन बहुत ऊँचा कर दिया है। स्वर्गीय प्रेमचंद एक स्थान पर अपने प्रसिद्ध उपन्यास गोदान में लिखते है–"संसार में जो कुछ सत्य है, सुन्दर है, नारी को मैं उसका प्रतीक समझता हूँ।"

निष्कर्षतः वर्तमान में नारी की भावनाओं, विचारों और विवाह, प्रेम, यौन–सम्बन्धों, सामाजिक परम्पराओं धार्मिक विश्वासों तथा स्त्री चरित्र की नैतिकता के प्रति दृष्टिकोण में बडा परिवर्तन आया है। इस दृष्टिकोण ने सदियों से स्थापित भारतीय नारी के जीवन मूल्यों को, जिन्हें हम तथाकथित शाश्वत मूल्यों के नाम से पुकारते आए हैं, जबरदस्त चुनौती दी है।

भारतीय नारी अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों के दबाव से सहम नहीं रही बल्कि मुक्ति की चाह में अब नये रास्ते तलाश कर रही है। पुराने आदर्श और नवीन जीवन मूल्यों में टकराव की स्थिति साफ देखी जा सकती है। समय के परिप्रेक्ष्य में नये संदर्भों से जुडना एक अनिवार्यता हो गई है। बुद्धि और विवेक से संचालित नारी शक्ति अपनी सही पहचान बनाने के लिए अधिकाधिक जागरूक हो गई है।

क्षमा जी ने नारी की स्वायत्तता को अनेक रूपों में चित्रित किया है। जहाँ एक ओर नारी के व्यक्तित्व को घर मं कैद करती नारियाँ हैं, उसी प्रकार नारी जाति की अस्मिता के प्रति सजग नारियाँ भी हैं। वह अपने जीवन में अपने संगी साथियों के चयन में स्वतन्त्र विचार रखना चाहती हैं। अब नारी अपने स्वत्व के लिए समाज में आमूल परिवर्तन की कामना करती है। वह अपनी समस्याओं का सामना पूर्ण सक्षमता से कर रही है। आर्थिक

आत्म–निर्भरता और मानसिक स्वतन्त्रता से वह अपने जीवन की गुत्थियों को स्वयम् सुलझाने में समर्थ है।

आज महिलाएँ अधिक निर्भिक, स्वावलम्बी, अधिकार चेता, अस्मिता व अस्तित्व के प्रति सजग एवं संवेदनशील दिखाई देती हैं। उनमें आ रहा यह सकारात्मक परिवर्तन एक विचित्र स्थिति से गुजर रहा है। उनके एक ओर शिक्षा, नौकरी, जीवन–मूल्यों में बदलाव की स्थिति है तो दूसरी ओर परपम्परागत संस्कार हैं। क्षमा जी ने आधुनिक भारतीय नारी के मन में चल रहे इस अन्तर्द्वंद्व का विवेचन–विश्लेषण कर आधुनिक स्त्री के संदर्भ में भारतीय जीवन दर्शन कराने का प्रयास किया है। बदली हुई परिस्थितियों ने नारी की सामाजिक भूमिका को पर्याप्त प्रभावित किया है। उसमें अब स्वाभिमान की भावना पनप रही है। उसने अब हर क्षेत्रों में प्रगति कर ली है। यहाँ तक की पुरूष प्रधान क्षेत्रों में प्रवेश करके उसने संपूर्ण पुरूष वर्ग को खुली चुनौती दी है। वह इस प्रकार पुरूष के अत्याचारों का सामना कर रही है और अभी तक समाज से टक्कर ले रही है और आगे बढ रही है।

1. मनुस्मृति–मन्वर्थ मुक्तावली, पृ.113
2. ममता कालिया–नई सदी की पहचानः श्रेष्ठ महिला कथाकार, पृ 78
3. शर्मा क्षमा से दिल्ली स्थित उनके निवास स्थान पर साक्षात्कार, दि. 6 अप्रैल, 2014
4. कमलेश्वर–नयी कहानी की भूमिका, पृ 98
5. राधारमण–अक्षरभारत, 27 दिसंबर, 1999, पृ. 24
6. मिततल सुशीला–आधुनिक हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ आमुख, पृ.5–6
7. संचतना, दिसंबर, 2009, पृ.23
8. कुमार अमित–हिन्दुस्तन, 29 जुलाई, 2007, पृ.17
9. वाणी, मार्च, 2008, पृ. 50